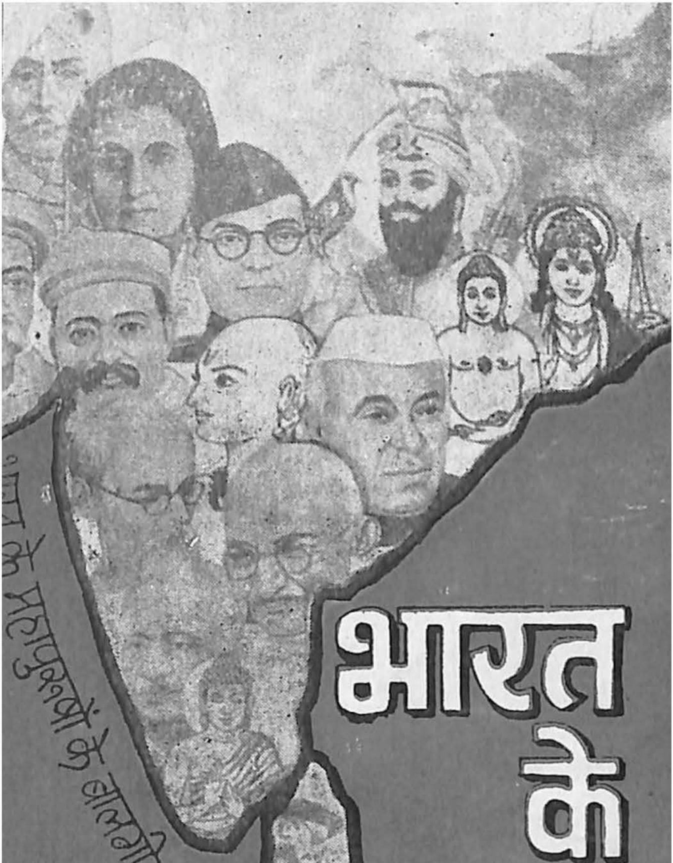

भारत के महापुरुषों के बालचरित

भारत के रतन

भाग–१

चन्द्रपाल सिंह मयंक

Y1B
5

हिमाचल पुस्तक भण्डार
सरस्वती भण्डार, गांधी नगर, दिल्ली-110031

Library IIAS, Shimla
H 028.5 Y 1 B
00084219

INDIAN INSTITUTE OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY SIMLA

भारत के रतन

(भारत के महापुरुषों के बालगीत)

चन्द्रपालसिंह यादव 'मयंक'

CATALOGUED

Himachal Pustak Bhandar,
Delhi

[हिमा]चल पुस्तक भण्डार
गांधी नगर, दिल्ली-110031

© लेखक

प्रकाशक : हिमाचल पुस्तक भण्डार
IX/221, सरस्वती भंडार
गांधीनगर, दिल्ली-110031

संस्करण : 1993

मूल्य : सात रुपये

मुद्रक : संजय प्रिन्टर्स, दिल्ली 110 032

BHARAT KE RATAN (

by : Chandrapal Singh Yadav 'Mayank Price Rs.

क्रम

अपना 'भारत देश'	5
भारत देश महान्	7
मर्यादा पुरुषोत्तम	8
योगेश्वर श्रीकृष्ण	9
गौतम बुद्ध	10
सम्राट अशोक	11
सम्राट विक्रमादित्य	12
महर्षि बाल्मीकि	13
महर्षि व्यास	14
महावीर स्वामी	15
महाकवि कालिदास	16
आचार्य विष्णु शर्मा	17
वैज्ञानिक आर्यभट्ट	18
सम्राट हर्षवर्धन	19
महारानी पद्मिनी	20
वीरांगना पन्ना	21
प्रणवीर प्रताप	22
दानवीर भामाशाह	23
शाहन्शाह अकबर	24
अकबर के नवरत्न	25
राजा बीरबल	26

राजा टोडरमल
महात्मा कबीरदास
गोस्वामी तुलसीदास
महात्मा सूरदास
भक्त-शिरोमणि मीराबाई
सम्राट शाहजहां
राजा राममोहन राय
गुरु नानकदेव
मंगल पांडे
झांसी की रानी—लक्ष्मीबाई
महर्षि दयानन्द सरस्वती
रामकृष्ण परमहंस
विवेकानन्द स्वामी
अब तक…

H
028.5
Y1B

Acc. No. 84219
Date 17-1-95
SIMLA

Library IIAS, Shimla
H 028.5 Y 1 B
00084219

अपना 'भारत देश'

यह है अपना 'भारत देश'।
इसका कितना सुन्दर वेश।

□

उत्तर में है खड़ा हिमालय,
मानो सिर पर मुकुट धरा।
दक्षिण में लहराया करता
हिन्द महासागर गहरा।
पूर्व दिशा में ब्रह्मदेश है,
पश्चिम में अफगानिस्तान।
यद्यपि हैं बन गये यहां अब
पूर्व-पश्चिमी पाकिस्तान।

यहां क्लेश का कहीं न लेश।
यह है अपना 'भारत देश'।

□

यहां जन्म धारण करने को
सुर-नर-मुनि सब ललचाते।
इसका गौरव-गीत शेष भी
गाकर पार नहीं पाते।

सब सुख-दात्री भूमि यहां की,
अमृतमय है शीतल जल।
यहीं देश—सुर-सरिता 'गंगा'
बहती है जिसमें निर्मल।

मानो पावन स्वर्ग-प्रदेश।
यह है अपना 'भारत देश'।

□

यहां सभ्यता और संस्कृति
आदि काल से रही महान्।
शिक्षा लेने को आते थे,
दूर-दूर से नित विद्वान।
'फाहियान' औ 'ह्वेनसांग' की
अभी-अभी ताजी है बात।
अनुपम ज्ञान-राशि भारत की
रही सदा से जग-विख्यात।

इसकी बातें सभी विशेष।
यह है अपना 'भारत देश'।

'भारत देश' महान्

प्यारे बच्चो ! रहा सदा से
अपना 'भारत देश' महान् ।
भूमि यहां की जगमग-जगमग
करते नर-रत्नों की खान ।

कलाकार—योद्धा—वैज्ञानिक,
शासक—कवि—नेता विख्यात,
यहां हुए हैं—अमर हो गई
दुनिया भर में जिनकी बात ।

जिनके नाम-काम की चर्चा
देश-विदेशों में छाई ।
जिनके यश की गौरव-गाथा
कवियों के दल ने गाई ।

हुए अनगिनत महापुरुष हैं,
कैसे सब बतलाऊं मैं ?
फिर भी आओ कुछ रत्नों से
परिचित तुम्हें कराऊं मैं ॥

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

कोशल के राजा दशरथ के
'रामचन्द्र' थे पुत्र महान्।
थे इतने गुणवान—कि अब तक
करते सब इनका सम्मान !

त्याग राज-सुख, पत्नी और
बन्धु को ले, बन गये सहर्ष।
रहे तपस्वी बन कर वहां,
बिताये पूरे चौदह वर्ष।

अन्यायी—अत्याचारी से
किया राम ने था संघर्ष।
अत्याचारी का विनाश कर,
भरा सभी के मन में हर्ष।

जीवन था आदर्श, राज्य भी
था इनका सुख का दाता।
सुख औ शान्ति जहां होती है,
'राम-राज्य' वह कहलाता।

योगेश्वर श्रीकृष्ण

'श्रीकृष्ण' वसुदेव-पुत्र थे,
यह भी कहलाते 'भगवान'।
योगिराज थे, नीति-निपुण थे,
वीर और अनुपम विद्वान।

करते रहे विरोध क्रूर—
अत्याचारी का पग-पग पर।
निर्बल, दीन, दुखी जनता की
सहायता की बढ़-बढ़कर।

'कुरुक्षेत्र' की युद्ध-भूमि में
अर्जुन को दे गीता-ज्ञान।
जीवन भर थे कार्य निरन्तर
किये एक से एक महान्।

आदर से, श्रद्धा से अब तक
जग में पूजे जाते हैं।
भाद्र-मास में जन्म-अष्टमी
इनकी मुदित मनाते हैं।

गौतम बुद्ध

एक समय में इसी देश में
जन्मे गौतम बुद्ध महान्।
जिनको अब तक सारी दुनिया
में मिलता है आदर-मान।

दुःख क्यों होता ? क्या कारण है ?
इसका प्राप्त किया था ज्ञान !
फिर ये अपनी शिक्षाओं से
करते रहे लोक-कल्याण !

इनके बौद्ध-धर्म का बच्चो—
है दुनिया में वहुत प्रचार।
था इनका उपदेश—कि सबसे
करो प्रेममय तुम व्यवहार।

दया करो सारे जीवों पर !
मारो मत, हिंसा न करो।
नहीं किसी को दुःख पहुंचाओ,
प्रेम-भाव से हृदय भरो।

सम्राट अशोक

एक समय में इसी देश में
बच्चो ! था सम्राट अशोक।
जिसकी सेना बादल-दल-सी
बढ़ती जाती थी बेरोक।

पर 'कलिंग' के बड़े युद्ध में,
उसका पलट गया था मन।
हुई विरक्ति युद्ध से, उसका
बना अहिंसामय जीवन।

अमिट चिह्न—उसके गौरव की—
हमको याद दिला जाते।
हैं अशोक के चक्र-सिंह भी
जगह-जगह पर दिखलाते।

टिकटों पर, रुपयों-नोटों पर
उसको तुम लोगे पहिचान।
राज्य-चिह्न यह उसी वीर का !
था सम्राट अशोक महान्।

सम्राट विक्रमादित्य

हुआ 'विक्रमादित्य' यहीं पर,
जो था बल-विक्रम की खान।
उज्जयिनी का प्रिय शासक था,
गुण-ग्राहक था, औ विद्वान।

बड़े-बड़े विद्वानों से था,
शोभित इस नृप का दरबार।
ललित कलाएं थीं दिन-प्रतिदिन
ऊंचे उड़तीं पंख पसार।

बड़े सुनहरे दिन थे, जब
विक्रमादित्य का था शासन।
इसका न्याय प्रसिद्ध जगत में,
औ प्रसिद्ध था सिंहासन।

जो हो स्वच्छ हृदय का, केवल
वही बैठ सकता उस पर।
है यह कथा प्रसिद्ध—कि वह
था चला गया उड़ कर ऊपर।

महर्षि बाल्मीकि

हुए आदि कवि 'बाल्मीकि' थे,
अपने भारत के अन्दर।
जिनकी बाल्मीकि 'रामायण'
ग्रन्थ संस्कृत का सुन्दर।

बाल्मीकि जी संस्कृत भाषा
के सचमुच अनुपम विद्वान।
दुनिया में इनकी कविता का
विद्वज्जन करते सम्मान।

'न्याय जीतता सदा जगत में,'
'सदा हारता है अन्याय।'
'सत् पर असत् न कभी जीतता,
चाहे कर ले कोटि उपाय।'

इस आदर्श-सत्य को उसमें
है महर्षि ने दिखलाया।
धर्म और मर्यादा-पालन
का महत्व है बतलाया।

महर्षि व्यास

हुए 'व्यास' जी यहीं, जिन्होंने
लिखा 'महाभारत' सुविशाल।
अपनी सुन्दर शिक्षाओं की
जो जग में है आप मिसाल।

नीति-शास्त्र का कोष अनोखा,
ग्रन्थ 'महाभारत' अनुपम।
भारत में ही नहीं, विश्व में
मिलता ग्रन्थ न इसके सम।

कथा और दृष्टान्तों द्वारा
किया विषय का दिग्दर्शन।
जिससे सुधरे, बचे बुराई
से जग में मानव-जीवन।

धन्य महाभारत के लेखक—
'वेद व्यास' अत्यन्त महान्।
इनका ग्रन्थ बड़े आदर से
पढ़ते दुनिया के विद्वान।

महावीर स्वामी

'जैन-धर्म' की विचार-धारा
बौद्ध-धर्म-सी है सुन्दर।
जीव-मात्र पर दया दिखाओ,
करो नहीं हिंसा तिलभर।

संयम से रहना हितकर है,
ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन।
धन का संचय नहीं उचित है,
नहीं उचित असमय भोजन।

चलो सत्य-पथ पर दुनिया में,
जीवन श्रेष्ठ बनाओ तुम।
क्षणभंगुर है मानव-जीवन,
समय न व्यर्थ गंवाओ तुम।

'महावीर स्वामी' महान् थे—
जैन-धर्म के संस्थापक!
इनके अनुयायी लोगों में,
आज अहिंसा अति व्यापक!

महाकवि कालिदास

यहीं महाकवि 'कालिदास' थे,
कवियों के कुल के शिरमौर।
जिनकी कविता-नाटक अनुपम;
जिनकी उपमा कहीं न और।

लिखे एक-से-एक काव्य,
औ नाटक जिनमें भरी कला।
सभी श्रेष्ठ हैं—सर्वोत्तम हैं
'मेघदूत' औ 'शकुन्तला'।

सारी दुनिया के साहित्यिक,
करते इनका आदर-मान।
सचमुच बच्चो, कालिदास हैं,
कवियों में हो गये महान्।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य था,
विद्वानों का पालनहार।
कालिदास शोभित करते थे,
उस महान् नृप का दरबार।

आचार्य विष्णु शर्मा

'पंचतंत्र' के अमर रचयिता—
हुए 'विष्णु शर्मा' इस काल।
'पंचतंत्र' की कहानियों को
लिख कर जो कर गये कमाल।

जग में अनुपम ये कहानियां!
इनमें शिक्षा की भरमार।
इन कहानियों के ही द्वारा
योग्य बन गये राजकुमार।

राजनीति औ नीति-शास्त्र का
इनमें भरा हुआ है ज्ञान।
पंचतंत्र' का दुनिया भर में
होता है अब भी सम्मान।

किया जा चुका कितनी भाषाओं
में है इनका अनुवाद।
हैं 'आचार्य विष्णु शर्मा' को
करते सब आदर से याद।

वैज्ञानिक आर्यभट्ट

'आर्यभट्ट' भी इसी समय में
हुए वैज्ञानिक—सरनाम ।
इनकी वैज्ञानिक खोजों का
उस युग में था भारी नाम ।

अभी-अभी थोड़े दिन पहिले
था महत्व का काम किया ।
'आर्यभट्ट' नामक उपग्रह का
भारत ने निर्माण किया ।

उस ही वैज्ञानिक के ऊपर
धरा गया 'उपग्रह' का नाम ।
थी उपलब्धि महत्वपूर्ण वह,
चर्चा उसकी हुई तमाम ।

वैज्ञानिक क्षेत्रों में हमको
अभी बहुत कुछ करना है ।
भारत को प्रत्येक दिशा में
आगे ही पग धरना है ।

सम्राट हर्षवर्धन

हुए नृपति भी इस भारत में
बड़े-बड़े साहित्य-सुजन ।
बच्चो, जिनमें सुप्रसिद्ध—
स्थानेश्वर नृपति हर्षवर्धन ।

'नागानन्द' और 'रत्नावली'
अति सुन्दर नाटक लिख कर,
साहित्यिक-समाज में इसनें
नाम सदा को किया अमर ।

दानवीरता में भी अद्भुत,
यह नृप बड़ा निराला था ।
कई बार सर्वस्व दान तक
इस नृप ने कर डाला था ।

यह प्रयाग में दीन-दुखी जन
को जाकर देता था दान ।
नहीं बचाता था तब कुछ भी,
हो जाता था रंक-समान ।

महारानी पद्मिनी

यहीं 'पद्मिनी रानी' थी, जो
रूप, बुद्धि, गुण की थी खान।
बच्चो, साथ-साथ थी वह
अत्यन्त साहसी, वीर महान्।

हंस कर जीवित जली चिता में!
दे दी जान, न छोड़ा धर्म।
धन्य पद्मिनी रानी, जिसने
किया प्रशंसित-अनुपम कर्म।

'लज्जा और सतीत्व' नारियों
के हैं सच्चे आभूषण।
इनकी रक्षा-हेतु निछावर
कर डाला हंस कर जीवन।

राजपूत तो हंस-हंस कर ही
देते रहे धर्म-हित प्राण।
रमणी-रत्न पद्मिनी सचमुच
भारत में हो गई महान्।

वीरांगना पन्ना

यहीं हुई थी 'पन्ना दाई',
जिसने त्याग महान् किया।
स्वामि-पुत्र के प्राण बचाने
को निज सुत बलिदान किया।

इसके यश को गौरव-गाथा
अब तक गाता है 'चित्तौड़'।
धन्य-धन्य तू पन्ना दाई!
धन्य त्याग तेरा बेजोड़!

बच्चो, अनुपम त्याग इस तरह
क्या मिल सकता और कहीं ?
स्वामिभक्ति के लिए पुत्र का
हुआ कहीं बलिदान नहीं।

एक सेविका का भी देखो
था कितना ऊंचा आदर्श।
क्या न शीश श्रद्धा से झुकता ?
धन्य देश यह भारतवर्ष!!

प्रणवीर प्रताप

स्वतन्त्रता का अमर पुजारी,
यहीं हुआ 'प्रणवीर प्रताप' !
जिसने कष्ट सहे जीवन-भर,
दिया शत्रु-दल को सन्ताप।

छोड़ राज-सुख बन में भटका,
बच्चों को रक्खा भूखा।
कई-कई दिन बीते, लेकिन
मिला न कुछ रूखा-सूखा।

फूल-सदृश शिशुओं को रोटी
घास-पात की खिलवाई !
किन्तु शत्रु के सम्मुख गर्दन
कभी नहीं झुकने पाई।

जीवन के अन्तिम क्षण तक था
देश-धर्म का जिसको ध्यान !
स्वतन्त्रता का अमर पुजारी,
निःसन्देह प्रताप महान्।

दानवीर भामाशाह

बच्चो, इसी देश में जन्मा
दानवीर था 'भामाशाह'।
देश-धर्म-हित निज सर्वस्व
दे दिया; की न तनिक परवाह।

था कुबेर-सा धनी, किन्तु था
स्वतन्त्रता का मतवाला।
हंसकर उसने अपना सब धन
था प्रताप को दे डाला।

जिससे राणा सैन्य सजा कर
युद्ध चलावे बिना रुके।
किन्तु स्वप्न में भी वह मुगल—
महीपों के सम्मुख न झुके।

देश-धर्म पर निज सर्वस्व
लुटाने की यह घटना धन्य!
स्वतन्त्रता का ऐसा प्रेमी
हमको नहीं दीखता अन्य।

शाहन्शाह अकबर

यहीं हुआ है मुगल-वंश का
शासक 'अकबर शाहन्शाह'।
जिसके शासन में सब खुश थे!
उठती कहीं न करुण-कराह।

बड़ी-बड़ी सुन्दर इमारतों—
का निर्माण कराया था।
'दीन-इलाही' मज़हब इसने
ऐसा एक चलाया था।

'जिसमें सभी धर्म वालों की
सुनते थे सब मिलकर बात।'
अकबर भी गुण का ग्राहक था—
है यह दुनिया में विख्यात।

हिन्दू हो अथवा हो मुस्लिम—
इसको दोनों रहे समान।
इसीलिए तो बच्चो, अकबर
को कहते हैं सभी महान्।

अकबर के नव रत्न

बच्चो, शाहन्शाह अकबर का
सचमुच अद्वितीय दरबार।
इसके अनुपम नव रत्नों से
जगमग-जगमग है संसार।

'अबुल फज़ल' औ 'फैजी' थे—
दो बड़े फारसी के विद्वान।
'मानसिंह' 'राजा टोडरमल'
और 'बीरबल' से थी शान।

कविवर थे 'अब्दुल रहीम'—
जो हुए 'खानखाना' विख्यात।
'तानसेन' बेजोड़ गवैया—
जिनकी अमर हो गई बात।

'मुल्ला दोफाजा' भी उनमें;
नौवें हुए 'हकीम हुमाम'।
अकबर के नव रत्न हो गये
हैं इतिहास-बीच सरनाम।

राजा बीरबल

अकबर और बीरबल—दोनों
के संग-संग प्रचलित हैं नाम।
कितने ही चुटकुले-लतीफे
बच्चो! हैं इनके सरनाम!

अकबर ने इनको प्रसन्न हो
'राजा' का दे दिया खिताब।
इनके मजेदार किस्सों की
कितनी ही छप चुकीं किताब।

सचमुच ही अति बुद्धिमान थे;
थे हाज़िर-जवाब मशहूर।
अकबर की सारी चिन्ताएं,
पलक झपकते करते दूर।

निःसंदेह मनोरंजन का
प्रेमी होता है इंसान।
दो प्रश्नों का एक ही उत्तर—
देते नृप बीरबल महान्।

राजा टोडरमल

बच्चो, राजा टोडरमल थे
अकबर के रत्नों में एक।
निःसंदेह कर गये हैं वे
कार्य एक अत्यन्त विशेष।

अकबर के सम्पूर्ण राज्य की
थी जमीन नपवा डाली।
कुल जमीन की कई श्रेणियों
में फिर सूची बनवा ली।

फिर लगान का एक अनोखा
'बन्दोबस्त' कराया था।
'जमींदारी' 'रैयतबारी'—
श्रेणी में बंटवाया था।

अब भी राजा टोडरमल को
सब आदर से करते याद।
सुविधा से थे लगे निपटने
कृषि-भूमि के सकल विवाद।

महात्मा कबीरदास

तनिक न पढ़े-लिखे थे, किन्तु
'कबीरदास जी' थे विद्वान।
इनके दोहों और पदों में
कितना भरा हुआ है ज्ञान।

साधु-सन्त जन के प्रेमी थे
और स्वयं थे सन्त-समान।
निःसंदेह कबीरदास जी
थे बच्चो, अत्यन्त महान्॥

ईश-प्रेम का पाठ पढ़ाया
और बताया जग-व्यवहार।
ज्ञान-मार्ग के, भक्ति-भाव के
इनकी कविता में सुविचार।

कितना ज्ञानी हो सकता है
साधारण श्रेणी का जन।
है इसका सुन्दर उदाहरण
श्री कबीर जी का जीवन।

गोस्वामी तुलसीदास

खूब सुना होगा तुम सबने
बच्चों, 'रामायण' का नाम।
जहां न 'रामचरितमानस' हो,
ऐसा एक न होगा धाम।

'रामचरितमानस' के लेखक
थे 'गोस्वामी तुलसीदास'।
काव्य-गगन में चमक रहा है
रवि-सा जिनका दिव्य प्रकाश।

इनकी रामायण ने फूंका
साहस-बल जन-जन के मन।
हिन्दू-जनता थी मृतवत् जो,
उसमें डाला नवजीवन।

कितने काव्य-ग्रन्थ-रत्नों से
देकर शिक्षा का भान्डार।
कर डाला गोस्वामी जी ने,
हम सबका कितना उपकार।

महात्मा सूरदास

बच्चो, 'सूरदास जी' सचमुच
हिन्दी-कवि-कुल के शिरमौर।
क्या कहने इनकी कविता के!
उसकी उपमा कहीं न और।

लिखा 'सूर सागर' में अनुपम
कृष्णचन्द्र जी का जीवन।
ऐसा सरस-मनोहर; पढ़कर
पुलकित हो-हो उठता मन।

सूर और तुलसी की कविता
एक-दूसरे से बढ़कर।
सरल नहीं है यह कह देना—
इनमें कौन अधिक सुन्दर।

सूर और तुलसी दोनों ही
हैं साहित्यिक हुए महान्।
इन पर श्रद्धा-पुष्प चढ़ाते
दुनिया के सारे विद्वान॥

भक्त-शिरोमणि मीराबाई

बच्चो, 'मीराबाई' तो मेवाड़-
भूमि की रानी थी।
भक्त-शिरोमणि थी वह सचमुच !
प्रभु की प्रेम-दिवानी थी।

भक्तों के संग रहती थी वह !
रचती ईश-भक्ति के गीत।
उन्हें मगन होकर गा-गाकर,
करती अपना समय व्यतीत।

'मेरे तो गिरधर गोपाल,
दूसरा न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट,
मेरो पति सोई।'

वार-बार रोका राणा ने,
किन्तु नहीं मीरा मानी।
प्रभु की प्रीति न छोड़ी उसने,
टेक न तोड़ी जो ठानी॥

सम्राट शाहजहां

बच्चो, शाहजहां का शासन
स्वर्ण-काल कहलाता है।
मुगल महीपों में सर्वोत्तम
इसको माना जाता है।

कला और साहित्यिक उन्नति
खूब दिखाती है इस काल।
'तख्ते-ताउस' 'ताजमहल' का
तुम्हें पता होगा ही हाल।

आर्थिक उन्नति हुई देश की;
ऊंचा खूब हुआ व्यापार।
राज्य-कोष भी भरा हुआ था,
प्रजा सुखी थी सभी प्रकार।

शाहजहां ने था करवाया
उत्तम भवनों का निर्माण।
सचमुच कई दृष्टियों से था
शाहजहां सम्राट महान्।

राजा राममोहन राय

किसी समय में भारत में था
'सती-प्रथा' का भारी जोर।
जलती थीं जीवित महिलाएं,
मरे हुए पति-संग सब ओर।

मन से या बेमन से उनको
देनी होती थी निज जान।
और दूसरी कुरीतियां भी
मिटा रही थीं हिन्दुस्तान।

थे बंगाल-प्रान्त में बच्चो,
हुए सुधारक एक महान्।
सती-प्रथा को नष्ट कर दिया,
किये अन्य उपकार महान्।

उच्च वर्ग के 'राजा' थे यह!
'राममोहन राय' था नाम।
'ब्रह्मसमाज' किया था स्थापित;
जिससे फैली कीर्ति ललाम।

गुरु नानकदेव

लम्बे-चौड़े सिक्ख पुरुष
हैं होते वीर और बलवान।
रोबीले रखते हैं साफ़ा;
दाढ़ी, केश व कड़ा-कृपाण।

तुम सबने भी देखे होंगे—
ये कहलाते हैं सरदार।
पुलिस-फौज में शूरवीरता
जाहिर इनकी भली प्रकार।

इन सिक्खों के गुरु हुए हैं
बच्चो ! नानकदेव महान्।
जिनकी प्रेरक शिक्षाओं ने
जग में नई डाल दी जान।

है पंजाब-प्रदेश—जहां पर
नानकदेव हुए, भाई !
'गुरु-ग्रन्थ साहब' में शिक्षा।
सब लोगों को बतलाई।

मंगल पांडे

थे अंग्रेज यहां पर आये,
पहले बनकर व्यापारी।
लगे यहां पर शासन करने
करके चालाकी भारी।

तुम इतिहास-बीच पढ़ने को
सारी बातें पाओगे।
फिर भी कुछ-कुछ इस पुस्तक से
परिचित हो ही जाओगे।

स्वतंत्रता के लिए देश में
बच्चो! कितना काम हुआ।
अट्ठारह सौ सत्तावन में
स्वतंत्रता-संग्राम हुआ।

सन् सत्तावन में 'मंगल
पांडे' ने बिगुल बजाया था।
देश-धर्म पर मर मिटने का
सबको पाठ पढ़ाया था।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

यहीं हुई थी 'लक्ष्मीबाई'—
जो थी 'झांसी की रानी'।
बड़ी साहसी-शूरवीर वह !
थी सचमुच ही मरदानी !

जब अंगरेजों का शासन था,
अपना भारत देश गुलाम।
'सन् सत्तावन' में स्वतंत्रता
का जब लड़ा गया संग्राम।

अद्भुत जौहर 'लक्ष्मीबाई'
ने उसमें दिखलाया था।
देख पराक्रम अंगरेजों ने
सादर शीश झुकाया था।

याद किया जायेगा जब तक
स्वतन्त्रता के हित बलिदान;
झांसी की रानी को तब तक
याद करेगा हिन्दुस्तान।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

महर्षि स्वामी दयानन्द ने
इसी देश में जन्म लिया।
मानवता की सेवा की!
अज्ञान मिटा, सत्कर्म किया।

कुरीतियों का नाश किया,
पाखन्ड आदि का खंडन कर।
सत्य-अर्थ को किया प्रकाशित;
सत्य-धर्म का मन्डन कर।

स्वामी जी ने बच्चो, स्थापित
किया देश में 'आर्यसमाज'।
देश-जाति की अनुपम सेवा
की; जो करता जाता आज।

'स्वतन्त्रता' की औ 'स्वराज्य' की
बात इन्हीं ने बतलाई।
हैं भारत के रत्न महाऋषि!
है सन्देह न कुछ, भाई।

रामकृष्ण परमहंस

बच्चो, दयानन्द स्वामी जब
रहे देश में जीवन डाल।
'रामकृष्ण जी परमहंस' तब
जगा रहे सोता बंगाल।

'परमहंस जी' थे महात्मा—
करते नवजीवन संचार;
सत्य-धर्म का पालन—संस्कृति,
जागृति का कर रहे प्रचार।

कलकत्ते के निकट बना है
उनका मंदिर अति पावन।
'मठ बेलूर' प्रसिद्ध—जहां पर।
करते आध्यात्मिक चिन्तन।

नहीं दिया था किसी नवीन
धर्म या संस्था को जीवन!
जिया त्यागमय सादा जीवन!
किया उच्च ईश्वर-चिंतन।

विवेकानन्द स्वामी

'परमहंस' के प्रतिभाशाली
एक शिष्य जग में मशहूर।
जिनकी कीर्ति गई अमरीका,
इस भारत से जो अति दूर।

नाम 'नरेन्द्रनाथ दत्त' था,
कहते उन्हें 'विवेकानन्द' !
क्या अनुपम व्यक्तित्व ! विद्वता
लख कर होता था आनन्द।

भारतीय शासन ने उनका
भव्य स्मारक बनवाया।
जो समुद्र में बना शिला पर,
देख-देख जग ललचाया।

बच्चो, अपने जीवन में तुम
यदि ऐसा अवसर पाना—
उसे अवश्य देखना 'कन्याकुमारी'
पड़े अगर जाना !

अब तक…

है महान् भारत—परम्परा
भी है इसकी रही महान्।
देखा बच्चो, कितने इसमें
हुए वीर, विद्वान, सुजान ।।

कलाकार—योद्धा—वैज्ञानिक—
शासक—कवि—नेता विख्यात !
यहां हुए हैं—अमर हो गई
दुनिया भर में जिनकी बात।

नर-रत्नों की खान सदा से
अपनी भारत-भूमि रही।
लेकिन मैंने अब तक बीते
हुए दिनों की बात कही।

नए दिनों की, नये समय की
बातें अब बतलाऊंगा।
हुए हाल में महापुरुष जो,
उनका हाल सुनाऊंगा।

Acc. 84215
17-1-55